[Printed Pages : 03]

Q/293-A/21

M.A. III SEMESTER (Main/ATKT) EXAMINATION, DECEMBER-2021

हिन्दी साहित्य

PAPER - IV

कथाकार प्रेमचन्द

Time : Three hours **Maximum Marks : 40**
Minimum Marks : 14

Note : सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंक दर्शाए गए हैं।

खण्ड 'अ'

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1x5 = 05

Q.1 निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर दीजिए –

(i) प्रेमचन्द उर्दू में किस नाम से लिखते थे?

(ii) सोफिया किस उपन्यास की पात्र है?

(iii) मिस्टर चड्डा और भगत किस कहानी के पात्र हैं?

(iv) प्रेमचन्द के किस उपन्यास में नगर और ग्राम का चित्रण हुआ है?

(v) 'ताई' कहानी के कहानीकार का नाम लिखिए।

खण्ड 'ब'

लघु उत्तरीय प्रश्न

2x5 = 10

Q.2 'रंगभूमि' उपन्यास के पात्र 'सूरदास' के चरित्र की दो विशेषताएँ लिखिए।

अथवा OR

वृन्दावन लाल वर्मा के दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

Q.3 'गोदान' के स्त्री पात्रों के नाम लिखिए।

अथवा OR

बैचेन शर्मा 'उग्र' के कला साहित्य की प्रमुख दो विशेषताएँ लिखिए।

Q.4 'मंत्र' कहानी की मूल संवेदना क्या है?

अथवा OR

विशम्भर नाथ कौशिक की दो कहानियों के नाम लिखिए।

Q.5 प्रेमचन्द के किन्ही चार उपन्यासों के नाम लिखिए जो आपके पाठ्यक्रम में न हों?

अथवा OR

भगवती प्रसाद वाजपेयी की उपन्यास कला की प्रमुख दो विशेषताएँ लिखिए।

Q.6 बैचेन शर्मा 'उग्र' के सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रेरित कोई दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

अथवा OR

वृन्दावन लाल वर्मा के दो उपन्यासों के नाम लिखिए।

खण्ड 'स'
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

5x5 = 25

Q.7 निम्नलिखित गद्यांश की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

मानव लालसाओं का कितना संक्षिप्त स्वरुप।

सूरदास ने आज कितना नाज पाया था वह ज्यों का त्यों हाँडी में डाल दिया। कुछ जौ थे, कुछ गेहूँ, कुछ मटर, कुछ चने, थोड़ी सी जुआर और मुट्ठी भर चावल। ऊपर से थोड़ा सा नमक डाल दिया। किसकी रचना ने ऐसी खिचड़ी का मजा चखा है? संतोष की मिठास थी, जिसमें मीठी संसार में कोई वस्तु नहीं।

अथवा OR

होरी की चेतना लौटी। मृत्यु समीप आ गई थी, आग दहकने वाली थी। धुँआ शान्त हो गया था। धनिया को दी न आँखों से देखा, दोनों कोनों से आँसू की दो बूँदें ढुलक पड़ी। क्षीण स्वर में बोला–मेरा कहा–सुना माफ करना धनिया। अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गयी।

Q.8 निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

'राज्य में हाहाकार मचा हुआ था, प्रजा दिन–दहाड़े लूटी जाती थी, कोई फरियाद सुनने वाला न था, देहातों की सारी दौलत लखनऊ में खिंची आती थी, और वेश्याओं में, भांडों में और विलासिता के अन्य अंगों की पूर्ति में उड जाती थी। अंग्रेज कम्पनी का ऋण दिन–दिन बढ़ता जाता था, कमली दिन–दिन भीगकर भारी हो जाती थी, देश में सुव्यवस्था न होने के कारण वार्षिक कर भी वसूल न होता था। रेजीडेट बार–बार चेतावनी देता था पर यहाँ तो लोग विलासिता के नशे में चूर थे, किसी के कानों मे जूँ न रेंगती थी।

अथवा OR

बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा रहा। संसार में ऐसे भी मनुष्य होते हैं जो अपने आमोद–प्रमोद के आगे किसी की जान की परवाह नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका ऐसा मर्म मेदी अनुभव अब तक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कन्धा देने, किसी का छप्पर को उठाने और किसी कलह को शान्त करने के लिए सदैव तैयार रहते।

Q.9 'गोदान' उपन्यास का कथासार लिखिए।

अथवा OR

'रंगभूमि' उपन्यास की मूल समस्या क्या है? सविस्तार लिखिए।

Q.10 'बड़े भाई साहब' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए।

अथवा OR

'पंच परमेश्वर' कहानी की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।

Q.11 प्रेचचन्द युगीन भारतीय सामाजिक परिवेश का वर्णन कीजिए।

अथवा OR

वृन्दावन लाल वर्मा के उपन्यासों की एतिहासिकता पर विचार व्यक्त कीजिए।

●●●